B.A. Part-I - Paper-I, Lecture-14.

Dr. Smita Kumari
Assistant Professor
Marwari College Darbhanga.

Topic सामाजिक नियंत्रण

अगर हम देखें तो पाएंगे कि प्राचीन काल में हमारा समाज छोटा एवं सरल था। समाज को व्यवस्थित रखना भी सरल था। उस समय धर्म, रीति-रिवाज, परम्पराएं एवं नैतिक विचार के माध्यम से ही समाज को व्यवस्थित तथा नियन्त्रित रखा जाता था। लेकिन धीरे-धीरे समाज जब सरल से जटिल होता गया परिवर्तन होते गए तब अनेक प्रकार के नियंत्रण के साधनों में भी वृद्धि होती गई ताकि समाज व्यवस्थित ढंग से चल सके।

सामाजिक नियंत्रण को बहुत सारे विद्वानों ने अपने-अपने ढंग से परिभाषित किया है -

ऑगबर्न और निमकॉफ ने सामाजिक नियंत्रण को परिभाषित करते हुए कहा है "व्यवस्था और स्थापित नियमों को बनाए रखने के लिए एक समाज जिस दबाव के प्रतिमान का प्रयोग करता है वह उसकी सामाजिक नियंत्रण व्यवस्था कहलाती है।"

Scanned by CamScanner

मैकाइवर एवं पेज " सामाजिक नियंत्रण का अर्थ उस ढंग से है जिसके सम्पूर्ण सामाजिक व्यवस्था में एकता बनी रहती है तथा जिसके द्वारा यह व्यवस्था एक परिवर्तनशील सन्तुलन के रूप में कार्य करती है।"

उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर हम कह सकते हैं कि सामाजिक नियन्त्रण की प्रक्रियाओं द्वारा ही समाज सन्तुलित ढंग से संचालित होता है।

सामाजिक नियन्त्रण के अभिकरण या साधन

समाज में व्यक्तियों का व्यवहार जिन कारकों से नियन्त्रित होता है वे सभी सामाजिक नियन्त्रण के साधन हैं। कुछ साधन प्रत्यक्ष होते हैं कुछ अप्रत्यक्ष, कुछ सकारात्मक तो कुछ नकारात्मक, कुछ औपचारिक तो कुछ अनौपचारिक। इस तरह देखें तो सामाजिक नियन्त्रण के अनगिनत साधन हो सकते हैं लेकिन कुछ प्रमुख साधन निम्न प्रकार हैं -

1. **परिवार - सामाजिक नियन्त्रण के साधन** में परिवार काफी अहम भूमिका निभाता है। परिवार में बच्चों को शुरू से ही सही - गलत का मतलब सिखाया जाता है जब बच्चा कोई गलती करता है तो उसे माँ या अन्य सदस्य डाँटकर उसको गलती का एहसास दिलाते हैं तथा दुबारा वही गलती दोहराने से मना करते हैं।

इसके साथ ही रोक-टोक तथा प्रताड़ना बच्चों पर लगायी जाती है प्रेम और स्नेह स्वयं ही नियंत्रण के प्रमुख साधन हैं जो केवल परिवार में ही संभव है। परिवार सबसे महत्त्वपूर्ण प्राथमिक समूह है और एक प्राथमिक समूह होने के कारण नियंत्रण के क्षेत्र में इसका प्रभाव प्राथमिक ही होता है।

वास्तव में जनरीतियां, लोकाचार प्रथा तथा नैतिकता आदि अपने आप ही व्यक्तियों को नियन्त्रित नहीं कर देते बल्कि यह कार्य परिवार के माध्यम से होता है।

2 राज्य (State) – औद्योगीकरण, नगरीकरण और व्यक्तिवादिता के कारण आज मानव समूहों के बीच संघर्षों और तनावों में इतनी वृद्धि हो गयी है कि केवल यही सत्ता व्यक्तियों के व्यवहारों पर प्रभावपूर्ण नियंत्रण रख सकती है जिसके पास शक्ति और दण्ड के विकसित साधन हों।

राज्य इसी प्रकार की एक सत्ता है जो प्रशासन, कानून, सेना, पुलिस और न्यायालय के द्वारा व्यक्ति व समूह के व्यवहारों पर नियन्त्रण रखती है।

3 शिक्षण संस्थाएं (Educational Institutions) – शिक्षण संस्थाएं व्यक्ति के आन्तरिक व बाह्य दोनों पक्षों को नियन्त्रित करती है। इसके द्वारा एक किशोर को ये आदतें

और बाह्य दोनों पक्षों से नियन्त्रित किया जाता है। इनके द्वारा ही एक विद्यार्थी अनुशासन भी सीखता है तथा अनुशासन में रहना भी सीखता है। इन्हें संस्थाओं के द्वारा होने वाला व्यक्तित्व के आन्तरिक पक्ष को नियन्त्रित करता है।

4. नेता तथा नेतृत्व (Leader and Leadership) — समूह के अधिकतर सदस्यों में स्वयं विचार करने और परिस्थिति के अनुसार कार्य करने की क्षमता नहीं होती। वे केवल दूसरों का अनुसरण ही करते हैं। ऐसी स्थिति में यह बहुत जरूरी हो जाता है कि उचित नेतृत्व के द्वारा उनके व्यवहारों पर नियन्त्रण रखा जाए। यही कारण है कि जिस समाज में नेतृत्व स्वस्थ और संगठित होता है वहाँ व्यक्तियों का जीवन भी संतुलित और नियन्त्रित रहता है।

5. धर्म (Religion) — धर्म कुछ अलौकिक विश्वासों और ईश्वरीय सत्ता पर आधारित एक शक्ति है, जिसके नियमों का पालन व्यक्ति पाप और पुण्य अथवा ईश्वरीय शक्ति के भय के कारण करता है। इस प्रकार धर्म एक आन्तरिक अलौकिक दबाव के द्वारा व्यक्ति और समूह के जीवन को नियन्त्रित करता है।

6. जनरीतियाँ (Folkways) — जनरीतियों को सामाजिक नियन्त्रण का एक प्रमुख साधन माना है।

Scanned by CamScanner

समनर का कहना है कि " जनरीतियां स्वाभाविक शक्तियों के समान होती है। जिनका पालन व्यक्ति अचेतन रूप से करता है।"

नमस्कार करना, आवाज देकर घर में घुसना, पैर लग जाने पर पुस्तक को माथे से लगाना आदि कम महत्वपूर्ण जनरीतियां हैं। सड़क किनारे चलना, सड़क पर कूड़ा न फेंकना आदि अधिक महत्वपूर्ण जनरीतियां हैं।

व्यक्ति यदि जनरीतियों की अवहेलना करता है तो उसकी आलोचना और निन्दा की जाती है लेकिन जनरीतियां केवल एक विशेष समूह के सदस्यों को ही नियंत्रित करती है।

2. प्रथाएं (customs) – व्यक्ति बचपन से ही बहुत सी प्रथाओं के बीच पलता है इसलिए प्रथाओं का पालन करना उसकी आदत बन जाती है। प्रथाओं की अधिकार शक्ति इतनी अधिक होती है कि व्यक्ति बिना सोचे ही इन्हें स्वीकार कर लेता है। जैसे – अपनी ही उपजाति में विवाह करना, गोत्र, परिवार और पिण्ड के नियमों को ध्यान में रखना आदि। व्यक्ति इसका पालन स्वयं करते हैं किसी कानून का दबाव नहीं होता।

8. कानून (Law) — इसका कार्य कुछ नैतिक उपयोगी व्यवहारों को करने का प्रोत्साहन देना और इनकी अवहेलना करने वाले व्यक्तियों को निश्चित दण्ड देना है।

Sumita Kumari
25/4/20.